University of Rajasthan
Jaipur

SYLLABUS

(Three/Four Year Under Graduate Programme in Deaf, Dumb &Blind)

(Hindi)

I & IV Semester

Examination-2024-25

As per NEP – 2020

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए.– मूक बधिर– प्रथम सैमेस्टर (हिन्दी)
प्रश्नपत्र–आदिकाव्य एवं भक्तिकाव्य

1 क्रेडिट – 25 अंक
6 क्रेडिट– 150 अंक
प्रश्न पत्र– 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन– 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों को आदिकाल और भक्तिकाल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों से अवगत कराना। 2. आदिकालीन और भक्तिकालीन काव्य तथा कवियों से परिचय कराना। 3. आदिकालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत करना। 4. भक्तिकालीन साहित्य और भक्ति आन्दोलन की अवधारणा स्पष्ट करना। 5. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1. आदिकालीन परिवेशः राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगें। 2. आदिकालीन शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा। 3. भक्तिकालीन की सामान्य परिस्थितियों तथा विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे। 4. प्रमुख भक्त कवियों तथा उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगें।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्न पत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।
खण्ड– अ के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघुत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यकम से 10 प्रश्न पूछे जाऐंगे। प्रत्येक प्रश्न 03 अंक का होगा।
खण्ड– ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2, इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से कुल 03 काव्यांश (एक कवि से एक) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।
खण्ड–स के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 5,6,7,8 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई–1

- आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- आदिकालीन साहित्य की अंतर्धाराऐं (सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य एवं रासो साहित्य)
- भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- भक्तिकाव्य की प्रमुख अंतर्धाराएँ (संतकाव्य, सूफीकाव्य, कृष्ण काव्य एवं राम काव्य)

इकाई–2

ढोला मारू का दूहा — संपादक नरोत्तम दास स्वामी, सूर्यकरण पारीक, राम सिंह
दोहा संख्या 8,9,10,19,20

विद्यापति – विद्यापति? संपादक– शिवप्रसाद सिंह
सुन रसिया अब न बजाऊ बिपिन बँसिया (9)
देख देख राधा रूप अपार (10)
चाँद सार लए मुख घटना करु लोचन चकित चकोरे (14)

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

विरह व्याकुल बकुल तरुवर, पेखल नंदकुमार रे (26)
कुंज भवन से चलि भेलि हे रोकल गिरधारी (36)

इकाई–3

कबीरदास – कबीर ग्रंथावली, संपादक– श्यामसुंदर दास, परिमार्जित पाठ–पुरूषोत्तम अग्रवाल

साखी– चेतावनी को अंक

पद–
- मन रे जागत रहिये भाई (राग गौड़ी– 23)
- पांडे कौन कुमति तोहि लागी (राग गौड़ी– 39)
- हम न मरैं मरिहैं संसारा (राग गौड़ी– 43)
- मन रे हरि भजि हरि भजि हरि भजि भाई (राग गौड़ी– 122)

तुलसीदास– विनय पत्रिका
- केसव! कहि न जाइ का कहिये (111)
- मन पछितैहै अवसर बीते (198)
- मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो (245)

इकाई–4

मीरां – मीरां पदावली, संपादक– शंभुसिंह मनोहर
- मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरौ न कोई (10)
- मैं तो गिरधर के घर जाऊँ (12)
- राणाजी थे जहर दियो म्हे जाणी (22)
- मीरां मगन भई हरि के गुण गाय (23)
- जोगिया जी! निसदिन जोऊं बाट (25)

आन्तरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबंध लेखन (संभावित विषय)

- आदिकाल की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ)
- आदिकाल का सीमांकन एवं नामकरण
- भक्तिकाल की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ)
- भक्ति के उदय संबंधी विभिन्न मत
- भक्ति के निर्गुण और सगुण रूपों मे समानता एवं अन्तर
- निर्गुण पंथ और कबीरदास
- 'श्रीरामचरितमानस' का महत्त्व
- सूरदास का वात्सल्य वर्णन
- सूफी मत की विशेषताएँ
- रसखान का कृष्ण–प्रेम
- मीरा की विरह–वेदना

अनुशंसित ग्रंथ:–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेन्द्र, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास– डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका– रामपूजन तिवारी

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए.– मूक बधिर– द्वितीय सैमेस्टर (हिन्दी)
प्रश्नपत्र–कहानी एवं उपन्यास

1 क्रेडिट – 25 अंक
6 क्रेडिट– 150 अंक
प्रश्न पत्र– 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन– 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1.	विद्यार्थियों में कल्पना शक्ति और विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना।
	2.	कथा साहित्य के विश्लेषण की समझ और संवेदनात्मक अनुभूति का विकास करना।
	3.	प्रमुख कथाकारों एवं उनकी रचनाधर्मिका का परिचय कराना।
	4.	कहानी तथा उपन्यास कलाको विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1.	जीवन की यथार्थ अनुभूति से परिचय हो सकेगा।
	2.	कथा लेखन तथा उसके प्रभाव का विश्लेषण सम्भव हो सकेगा।
	3.	आदर्श और सभ्य नागरिक बन सकेगें।
	4.	आत्माभिव्यक्ति की भावना विकसित हो सकेगी तथा भावी लेखन की पृष्ठभूमि का विकास होगा।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्न पत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।
खण्ड– अ के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघुत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाऐंगे। प्रत्येक प्रश्न 03 अंक का होगा।
खण्ड– ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2, इकाई 3 में निर्धारित पाठ से एक–एक अवतरण (एक कहानी से एक) तथा इकाई 4 (उपन्यास) से एक अवतरण आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।
खण्ड–स के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई–1

- कहानी– परिभाषा एवं तत्व
- हिन्दी कहानी– उद्भव एवं विकास के प्रमुख चरण।
- उपन्यास– परिभाषा एवं तत्व
- हिन्दी उपन्यास – उद्भव एवं विकास के प्रमुख चरण

इकाई–2

उसने कहा था	चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
पूरा की रात	प्रेमचन्द

इकाई–3

राजा निरबंसिया–	कमलेश्वर
सिक्का बदल गया	कृष्णा सोबती

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इकाई–4

ग्लोबल गाँव के देवता – रणेन्द्र (उपन्यस)

आंतरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबन्ध लेखन (संभावित विषय)

- कहानी एवं उपन्यास के स्वरूप में समानता एवं अंतर
- हिन्दी कहानी के प्रमुख आन्दोलन– नयी कहानी, सचेतन कहानी, समानान्तर कहानी, साठोत्तरी कहानी, समकालीन कहानी
- प्रेमचन्द की कहानी कला
- पाठ्यक्रम में निर्धारित किसी एक कहानी की मूल संवेदना एवं शिल्प–विधान
- उपन्यास के प्रकार (सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक)
- हिन्दी उपन्यासः विकास के चरण
- हिन्दी उपन्यास परम्परा में प्रेमचन्द का महत्व

अनुशंसित ग्रंथः–

- ग्लोबल गांव के देवता– रणेन्द्र
- मानसरोवर भाग–1– प्रेमचन्द
- हिन्दी उपन्यास का इतिहास– गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास– रामस्वरूप चतुर्वेदी
- हिन्दी कहानी का विकास– मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- कहानीः नई कहानी– नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- कहानी की रचना प्रकिया– परमानन्द श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

मूक बधिर विद्यार्थियों के लिये

पाठ्यक्रम

बी.ए. – तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी)

प्रथम प्रश्न पत्र – रीतिकाल

1 क्रेडिट = 25 अंक
6 क्रेडिट = 150 अंक
प्रश्न पत्र = 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन = 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों में महान कवियों की रचनाओं के माध्यम से लेखन शैली और अभिव्यक्ति क्षमता का विकास। 2. हिन्दी साहित्य के गहन अध्ययन द्वारा साहित्यिक ब्रज भाषा के स्वरूप और विकास की जानकारी प्राप्त करना। 3. हिन्दी साहित्य की सुदीर्घ रीतिकालीन काव्य परम्परा से परिचित करना। 4. सृजनात्मक लेखन और विवेचनात्मक दृष्टि का विकास करना
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1.रीतिकाल के महान कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन कर अपने साहित्यिक कौशल का विकास कर सकेंगे। 2. रीतिकालीन विभिन्न आचार्यों की रीति सम्बन्धित अवधारणाओं को काव्य के माध्यम से समझ सकेंगे। 3. रीतिकाल की सामाजिक, साँस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पृष्ठभूमि से परिचित होंगे। 4. हिन्दी साहित्य की समृद्ध परंपरा से अवगत होकर रोजगार के विभिन्न अवसर प्राप्त कर सकेंगे।

प्रश्न पत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्न पत्र तीन खण्डों (अ ब स) में विभक्त है।

खण्ड– अ के अन्तर्गत्त प्रश्न संख्या 1 अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा।

खंड–ब के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 2, 3, 4, 5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2 एवं इकाई 3 व 4 में निर्धारित पाठ से कुल 04 काव्यांश (एक कवि से एक) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।

खंड– स के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई – 1

रीतिकालीन परिस्थितियाँ और नामकरण
रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृतियाँ (रीतिबद्ध, रीतिमुक्त रीतिसिद्ध)

इकाई–2

बिहारी– बिहारी रत्नाकर – सम्पादक – जगन्नाथ दास रत्नाकर

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

1. मेरी भव बाधा हरो
2. जम – करि – मुँह तरहरि परयो
3. कौन भाँति रहि है बिरदु
4. कहत, नटत, रीझत, खिझत
5. तंत्री– नाद कवित्त रस३
6. या अनुरागी चित्त की
7 नर की अरु नल नीर की
8. स्वारथ सुकृतु व श्रम वृथा
9. बड़े न हुजे गुनन बिनु
10. घरू घरू डोलत दीन वहै।

देव
1. जाकै न काम न क्रोध विरोध३.
2. रावरौ रूप रहयौ भरि नैनन३..
3. ऐसे जु हाँ जानत हि जैह तु विषय के संग..
4 डार द्रुम पालना बिछौना नव पल्लव के३..
5. जब तै कुंवर कान्ह को ध्यान करै तब कान्हकृ

इकाई – 3

भूषण
1. साजि चतुरंग – सैन अंग मैं उमंगच्छारि सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
2. बेद राखे बिदित पुरान परसिद्ध राखे राम–नाम अति रसना सुधर में।
3. उतरि पलँग तें न दियो हैं धरा पै पग तेऊ सगवग निसिदिन चली जाती हैं।
4. ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी ऊंचे घोर मंदर के अंदर रहाती है।
5. आपस की फूट हीतें सारे हिंदुवान टूटे टूट्यो कुल रावन अनीति अति करते।

घनानंद
1. छवि को सदन, मोदमंडित बदन–चन्द
2. अन्तर उदेग–दाह, आँखिन प्रवाह – आँसू
3. नैनन मैं लागै जाय, जागै यु करेजे बीच
4. दिननि के फेर सों, भयो है हेर–फेर ऐसौ
5. मीत सुजान अनीत करौ जिन, हा हान इजियै मोहि अमेहि

इकाई – 4

पद्माकर
1. कूलन में, केलिनश, कछारन में, कुंजन में,..
२. आयी हौ खेलन फणइयाँ वृष भानपुरी ते सखी सँग लीने ३
3. तीर पर तरनि – तनूजा के तमाल –तरे,...
4. ऐसी न देखी मुनी सजनी धनी बाढ़त जात वियोग सी बाधा३३
5. चंचला चमाकैं चहुँ ओस ते चाह भरी,....

सेनापति
1 करत कलोल स्तुति दीरघ, अमोल, तोल,...
2. कालिंदी की धार निरधार है अधर, गन३.
3. मालती की माल तेरे तन कौ परस पाइ,...
4. मान्हु प्रबाल ऐसे ओठ लाल लाल भुज,...
8. बरन वरन तरु फूले उपवन बन,.....

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

आन्तरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबन्ध लेखन–

- रीतिकाल की परिस्थितियां (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक)
- रीतिकाल का सीमांकन एवं नामकरण
- रीतिकालीन काव्य परम्परा और प्रमुख कवि
- घनानंद का विरह वर्णन
- रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य धारा में अंतर एवं समानता
- भूषण के काव्य में राष्ट्रीयता
- बिहारी की काव्यकला
- सेनापति – ऋतुवर्णन

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

मूक बधिर विद्यार्थियों के लिये

पाठ्यक्रम

बी.ए. – चतुर्थ सेमेस्टर (हिन्दी)

प्रथम प्रश्न पत्र – नाटक, एकांकी एवं कथेतर विधाएँ

1 क्रेडिट = 25 अंक
6 क्रेडिट = 150 अंक
प्रश्न पत्र = 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन = 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	छात्रों को हिंदी के प्रसिद्ध नाटककारों के लेखन कला से परिचित करा कर उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना। हिंदी गद्य की नाटक एकांकी व अन्य कथेतर गद्य विधाओं से छात्रों को परिचित करवाना। छात्रों में सृजनात्मक लेखन कला व उनकी आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	हिंदी की नाटक एकांकी व कथेतर गद्य विधाओं के अध्ययन से छात्रों के साहित्यिक कौशल का विकास। आधुनिक काल की कथेतर गद्य विधाओं की प्रवृत्तियों से छात्रों का परिचय होगा। छात्रों की लेखन कला का विकास व उनकी विवेचनात्मक व विश्लेषात्मक दृष्टि का विकास होगा।

प्रश्न पत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्न पत्र तीन खण्डों (अ ब स) में विभक्त है।

खण्ड– अ के अन्तर्गत्त प्रश्न संख्या 1 अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा।

खंड–ब के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 2, 3, 4, 5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2 में से 2 व्याख्याएं एवं इकाई 3 व 4 में से 2 व्याख्याएं कुल 04 व्याख्याएं आंतरिक विकल्प सहित पूछी जायेंगी । प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।

खंड– स के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई – 1

नाटक- परिभाषा एवं तत्व, हिंदी नाटक का विकास

एकांकी- परिभाषा एवं तत्व, हिंदी एकांकी का विकास

कथेतर विधाओं – संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी, रिपोर्ताज, आत्मकथा का परिचय एवं विकास।

इकाई–2

नाटक – रक्तकमल – लक्ष्मी नारायण लाल

इकाई – 3

एकांकी- उत्सर्ग – रामकुमार वर्मा

सीमा रेखा – विष्णु प्रभाकर

महाभारत की एक साँझ – भारत भूषण अग्रवाल

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इकाई – 4

कथेतर विधाएँ

रेखाचित्र- सरजू भैया - रामवृक्ष बेनीपुरी

आत्मकथा – अपनी खबर – पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

संस्मरण – सुभद्रा कुमारी चौहान - महादेवी वर्मा

डायरी – महुए की मुस्कराहट (रायपुर – बस्तर : 1983)- निर्मल वर्मा

रिपोर्ताज – अदम्य जीवन – रांगेय राघव

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR